

[श्री साक्षर कृष्ण शर्माजी]

कल मेरे मित्र श्री समर सिंह बोले हैं—दोनों ने इस बात पर बल दिया कि हम कहीं अपनी आर्थिक-सामाजिक कल्याण और ध्योरेतिक कल्याण में ऐसी गलती न कर बैठें कि जिस के कारण आकाशवाणी और और सुरवेद्यन जैसे व्यक्तिमाली संचार साधनों पर किसी ब्रेस्टेड-इन्स्ट्रुस्ट का प्रभाव हो जाय या इस की इस प्रकार की रचना बन जाय कि जिस के कारण देश का ग्रहित हो। लेकिन मैं उन की भाषा सुनने के बाद और उन का भाषण सुनने के बाद भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जहाँ तक मूल मुद्दा है, उस मूल मुद्दे पर कोई बहुत ज्यादा मतभेद नहीं है, मतभेद उस के त्रियान्दयन के तरीके पर है।

समाप्ति महोदय : अब प्राप धयले दिन धयना भाषण जारी रखेंगे।

अब प्राइवेट मेम्बरस बिजनमे शुरु होता है।

श्री पबित्र मोहन प्रधान, प्राप धयना मानन मूव करें।

### COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

TWENTY-FIFTH REPORT

SHRI PABITRA MOHAN FRA-DHAN (Deogarh): Sir, I beg to move:

"That this House do agree with the Twenty fifth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 29th November, 1978".

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That this House do agree with the Twenty-fifth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 29th November, 1978".

The motion was adopted.

15 hrs.

### RESOLUTION RE. RECLAMATION OF BARREN AND FALLOW LAND FOR DISTRIBUTION TO LANDLESS PERSONS—Contd.

MR. CHARMAN: Now, we take up further discussion of the following Resolution moved by Shri Laxmi Narain Nayak on the 4th August 1978:

"This House is of opinion that with a view to providing employment to about 7 crore unemployed persons, reclaiming barren and fallow land and increasing food production in the country, the Central Government should provide neces-

sary financial assistance to State Governments and Union territories Administration to form a Land Army which may reclaim about 5 crore acres of barren and fallow land within one year and distribute it among the landless persons after providing irrigation facilities and other inputs."

श्री बसुना प्रसाद शास्त्री (रीवा) : माननीय सभापति महोदय, मैं कह रहा था कि अग्रर अर्थि-हीनों को उनकी जीविका का साधन, उनको खेती करने के लिए जमीन नहीं दी गयी तो इस का परिणाम बड़ा भयावह हो सकता है। उस दिन मैंने बोलते हुए इस बात का जिक्र किया था कि आध्याय विनोबा भावे ने इस सम्बन्ध में एक प्रयास किया था कि देश में एक भूमिहीनों की जमीन मिल जाय लेकिन उनका प्रयास सफल नहीं रहा। आज भी हमारे देश में 4,74,9400 व्यक्ति हैं जो खेती का काम करते हैं और जिन के पास जमीन नहीं है। ये ऐसे लोग हैं जो खेती का काम करते हैं, धानाज पैदा करते हैं लेकिन उन के पास एक इंच भी जमीन नहीं है। यह स्थिति आज देश में है। यह स्थिति आज देश में है जो गयी है कि अग्रर भौद्वानिगीन उन को जमीन नहीं मिलती है, उन को जीविका का साधन नहीं मिलना है तो इस का परिणाम इतना भयानक हो सकता कि उस की कल्पना नहीं की जा सकती।

हमें दुनिया का इतिहास सिखाता है कि जहाँ दबे हुए लोगों को, अन्ध्याय दीहित लोगों को उन को जीविका के साधन नहीं दिये जाते वहाँ बे निराज हो कर, हताय हो कर साम्प्र कानि पर उनर धाते हैं। इस के लिए कोई बहुत बड़ा प्रमाण इन्हे की प्राव-शयकना नहीं है। हमारे देश में भी मूल में, 1954 में ऐसा हुआ और तीन तथा वस तो इस के प्रमाण हैं ही। बहुत विनां तक इन को ऐसे ही दबाया नहीं रखा जा सकता है और आज देश का वातावरण भी ऐसा ही है कि इन को भौद्वानिगीन जमीन मिलनी चाहिए इन सब को जमीन देना कोई असंभव बात नहीं है लेकिन इस के लिए इच्छा भक्ति और संकल्प होना चाहिए। अग्रर ऐसा नहीं हुआ तो जैसा कि मैंने कहा कि ये लोग विवश हो जाएँगे, और मैं नहीं चाहता कि वह दिन धायें, जिस दिन इस देश में न्याय पाने के लिए खून की नदियाँ बहें, क्रान्ति हो। वह दिन दुर्भाग्य का दिन होगा। उस में लोकतंत्र समाप्त हो जाएगा। एक पूजा आध्याय होता है कर कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।

बुद्धितः कि न करोति पापम्

पूजा आध्याय क्या नहीं करता। अभी हम जोड़ी देर पहले आकाशवाणी और आकाशवाणी पर चर्चा कर रहे थे और कह रहे थे कि लोकतंत्र की नींव को मजबूत रखने के लिए संचार माध्यमों का पूर्णतः स्वतंत्र होना आवश्यक है, संचार माध्यमों पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होना चाहिए ताकि जनता की आकाशवाणी स्वतंत्र रूप से देश के सामने आ सकें। किन्तु आकाशवाणी में कहना चाहता हूँ कि संचार माध्यमों को स्वतंत्र रखने से ही लोकतंत्र जीवित नहीं रहेगा।